(कविता)

पहचान

कमज़ोरी नही होता।
उसने धीरे से
खुद से कहा—
“मुझे भी
आराम चाहिए,
मुझे भी
खुश रहने का हक़ है।”
उसकी आवाज़
अब ऊँची नही थी,
पर साफ़ थी—
और साफ़ आवाज़ें
दूर तक जाती हैं।
वह बदली नही,
बस लौट आई—
खुद के पास।
अब अगर वह हँसती है,
तो थकी हुई नही,
और अगर वह रोती है,
तो छुपकर नही।
क्योंकि उसने सीख लिया है—
अपने लिए जीना
स्वार्थ नही,
जरूरत है।

शिवम कुमार
विज्ञान
12 वीं (पूर्व)